परमाणु ऊर्जा से भय कैसा!

विद्युत उत्पादन को लेकर देश एक अजीब ऊहापोह से गुजर रहा है। एक ओर गंगा के घटते जलस्तर को देख कर उत्तराखंड में नए पन बिजलीघरों को बनाने पर रोक लगाने की मांग तूल पकड़ रही है तो दूसरी ओर परमाणु बिजली उत्पादन से संभावित खतरों को देख कर जनमानस में यह भ्रान्ति है कि शायद सरकार उनके प्रति संवेदनशील नहीं है, कोयले से बिजली उत्पादन से होने वाले नुकसानों से अब लोग अपरिचित नहीं हैं।

परमाणु बिजली घरों के खिलाफजो मुहिम छिड़ी है वह अज्ञानतावश फैले भ्रम की भांती है, हमारे देश की काफी जनता अभी अनपढ़ है और परमाणु शब्द से ही उसे बम दिखाई देने लगता है। पिछले दिनों फुकुशिमा की दुर्घटना को भी भ्रम फैलाने वाले लोग परमाणु विकीरण से जोड़ रहे हैं। जबकि ऐसा नहीं है, फुकुशिमा में तो लोग मारे गए सुनामी से, हमारे देश में भी सुनामी से कम लोग नहीं मरे थे। तब भय नहीं हुआ था लोगों को! एक भ्रम और है कि परमाणु बिजलीघर संयंत्र को ठंडा करने वाले जल को नदी या समुद्र में बहा दिया जाता है जिससे जल के समस्त जीव प्रभावित हो जाते हैं। उन जीवों को खाने वाले मनुष्य भी प्रभावित हो जाते हैं।

सच्चाई जानने के लिए चंद रोज पूर्व भोर की बेला में नरोरा परमाणु प्लांट और उसके चारों ओर के वन का एक चक्कर लगाया। निर्माण के साथ ही परमाणु बिजलीघर के चारों ओर 1.6 किमी के दायरे में सात लाख पौधे लगाए गए हैं, जो आज 22 वर्षों में एक घने वन के रूप में विसित हो चुके हैं, वन के गेट के अंदर घुसते ही पहले तो एक अजीब से सन्नाटे का सामना हुआ, पर कुछ ही क्षणों के बाद, चिड़ियों के कलरव से सुबह का आलस्य भाग गया। वन की सरहद पर बनी दीवार पर बंदरों की एक बड़ी फौज कतार बनाए, मानो हमारे स्वागत को बैठी थी! मुश्किल से बीस कदम गए होंगे कि सामने नील गाय का झुंड मिला। अक्सर गांव की सड़कों पर गाय, भैंस, कार की आवाज से भागने लगती हैं पर यहां तो नील गाय, हिरन और जंगली सुअर ऐसे चर रहे थे जैसे यह रोज की बात हो। उन तीन घंटों में अनगिनत प्रकार के पशु, पक्षी देखे, जिनमे मोर, ग्रेड क्रेस्टेड पोचार्ड, तीतर, जंगली मुर्गे, बगुले, नहर में मछलियां, घड़ियाल, मगर, और बड़े-बड़े कछुए प्रमुख थे, साथ चल रहे एनपीसीआईएल के अधिकारी ने बताया कि यहां जाड़ों में बाघ भी रहते हैं, भूवैज्ञानिक होने के नाते अनेक वनों में घूमने का सरकारी कार्यकाल के दौरान सौभाग्य हुआ, पर इतने सारे और इतने प्रकार के पशु,पक्षी एक साथ कभी नहीं देखे।

सुना था कि परमाणु बिजलीघर से निकले पानी और धुंए से विकिरण होता है, गंभीर मारक रोग हो जाते हैं। तब फिर वह कौन सी शक्ति है जो इस जंगल में जीवन को स्वस्थ रखे है, इसका उत्तर मिला, प्लांट के भीतर हर घड़ी की जाने वाली विकिरण की जांच को देख कर, तभी यह भी समझ में आया कि वहां के कूलिंग टावर से निकलने वाला धुंआ तो मात्र भाप होती है। प्लांट से निकलने वाली गैस, एक 140 मीटर ऊंची चिमनी से निकाली जाती है। चिमनी में लगे फिल्टर सारी धातु कणों को छान लेते हैं और यदि विकिरण का लेशमात्र भी अंदेशा होता है तो प्लांट स्वतरू बंद हो जाता है। कंट्रोल रूम से प्लांट की हर गतिविधि पर

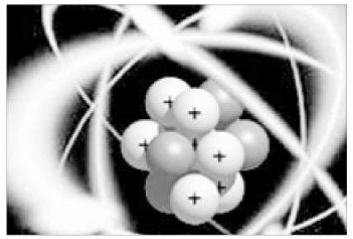

24 घंटे नजर रखी जाती है। कंट्रोल रूम में ड्यूटी करने वाले अभियंताओं को कड़े परीक्षण से गुजरना पड़ता है, जो लोग इस परीक्षा के दस पर्चों में उत्तीर्ण हो पाते हैं वही ड्यूटी कर सकते हैं। हर कदम पर तकनीकी और सुरक्षा को लेकर सख्ती इतनी होती है कि पावर प्लांट से केवल बिजली बाहर जाती है और कुछ नहीं। यदि विकसित देशों की श्रेणी में आना है तो ऊर्जा तो हर हाल में चाहिए। कोयले से पर्यावरण प्रभावित हो रहा है। पन-बिजली और परमाणु ऊर्जा के हम खिलाफ होते जा रहे हैं। ऐसे में कैसे होगा विकास?

(लेखक वरिष्ठ पर्यावरणविद् एवं भूवैज्ञानिक हैं)

अभिमत

● बीके जोशी

j osi.vij aykumar@gmail.com

मो. 8853755802

हमारे देश की काफी जनता अभी अनपढ़ है और परमाणु शब्द से ही उसे बम दिखाई देने लगता है। पिछले दिनों फुकुशिमा की दुर्घटना को भी भ्रम फैलाने वाले लोग परमाणु विकिरण से जोड़ रहे हैं